13

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा

ध्यान दें:

त्रेता युग के चन्द्र श्री राम थे। पुरुषोत्तम श्री राम प्रसिद्ध हैं। इससे हम श्री राम के वीरता और सौन्दर्य के विषय में कुछ विचार सकते हैं। हम तो अब सब जगह राम कीर्तन को करते हैं और उससे हमें महान आनन्द होता है। हम साधारण जन यदि उनके कीर्तन से आनन्द करते हैं तो भक्त हनुमान ने निःस्वार्थ भक्ति से अपने प्रभु राम का कैसे गुण कीर्तन किया इसके विचार से ही हमें आनन्द उत्पन्न होता है। अवश्य ही यह हम सभी भारतीयों को जानना चाहिए। इस पाठ में हम उस विषय को जानेंगे। वह राम कैसे वीर थे और उसका सौन्दर्य किस प्रकार का था यह जानकर आनन्द का अनुभव होगा। इस पाठ में 13 श्लोक हैं।

उद्देश्य

- इस पाठ को पढ़कर आप समर्थ होंगे;
- राम के सौन्दर्य विषय में;
- राम महान वीर थे यह जान पाने में;
- राम के सभी अस्त्र कैसे थे इस विषय में जानने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए, जानने में;
- व्याकरण विषयक कुछ ज्ञान को प्राप्त करने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए यह जानने में;
- उपमा अंलकार के विषय में कुछ ज्ञान को प्राप्त करने में;

13.1) मूलपाठ

प्रभया पर्वतेन्द्रोऽसौ युवयोरवभासितः।
राज्यार्हावमरप्रख्यौ कथं देशमिहागतौ॥11॥

ध्यान दें:

पद्मपत्रेक्षणौ वीरौ जटामण्डलधारिणौ।
अन्योन्यसदृशौ वीरौ देवलोकादिहागतौ॥12॥

यदृच्छयेव संप्राप्तौ चन्द्रसूर्यौ वसुंधराम्।
विशालवक्षसौ वीरौ मानुषौ देवरूपिणौ॥13॥

सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ इव गोवृषौ।
आयताश्च सुवृत्ताश्च बाहवः परिघोपमाः॥14॥

सर्वभूषणभूषार्हाः किमर्थम् न विभूषिताः।
उभौ योग्यावहं मन्ये रक्षितुम् पृथिवीम् इमाम्॥15॥

ससागरवनां कृत्स्नां विन्ध्यमेरुविभूषिताम्।
इमे च धनुषी चित्रे श्लक्ष्णे चित्रानुलेपने॥16॥

प्रकाशेते यथेन्द्रस्य वज्रे हेमविभूषिते।
संपूर्णाश्च शितैर्बाणैस्तूणाश्च शुभदर्शनाः॥17॥

जीवितान्तकरैर्घोरैर्ज्वलद्भिरिव पन्नगैः।
महाप्रमाणौ विपुलौ तप्तहाटकभूषणौ॥18॥

खड्गावेतौ विराजेते निर्मुक्तभुजगाविव।
एवं मां परिभाषन्तं कस्माद् वै नाभिभाषतः॥19॥

सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद् वानरपुंगव।
वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद् भ्रमति दुःखितः॥20॥

प्राप्तोऽहं प्रेशितस्तेन सुग्रीवेण महात्मना।
राज्ञा वानरमुख्यानां हनुमान् नाम वानरः॥21॥

युवाभ्याम् स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति।
तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम्॥22॥

भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नंसुग्रीवप्रियकारणात्।
ऋष्यमूकादिह प्राप्तं कामगं कामचारिणम्॥23॥

13.2) अब मूल पाठ को समझें।

प्रभया पर्वतेन्द्रोऽसौ युवयोरवभासितः।
राज्यार्हावमरप्रख्यौ कथं देशमिहागतौ॥11॥

अन्वय- युवयोः प्रभया असौ पर्वतेन्द्रः अवभासितः, तादृशौ राज्यार्हो अमरप्रख्यौ युवां इह देशं कथम् आगतौ।

अन्वयार्थः- आप दोनों राम लक्ष्मण की दीप्ति से यह पर्वत राज प्रकाशित हुआ। उन जैसे राज्य के योग्य, देवताओं के समान पराक्रम वाले आप दोनों यहाँ इस प्रदेश में कैसे, किस हेतु आए हो।

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा

सरलार्थः- हनुमान ने राम लक्ष्मण से पूछा कि जिन दोनों की दीप्ति से यह ऋष्यमूक नामक पर्वत प्रकाशित हो गया, उन दोनों जैसे दीप्तिमान राज सिंहासन के योग्य, देवताओं के समान आकृति वाले आप दोनों किस कारण से इस देश को आए हो।

तात्पर्यार्थः- राम लक्ष्मण ने वनवास किया। इसीलिए वन में जो भोजन प्राप्त करते थे उसे ही वे दोनों खाते थे। फिर भी उन दोनों की जो कान्ति थी उस कान्ति से सम्पूर्ण ऋष्यमूक पर्वत प्रकाशित हुआ। उन दोनों के दर्शन से ज्ञात होता था की वो दानों राज सिंहासन के योग्य हैं और देवताओं का जैसा पराक्रम होता है। वैसा ही पराक्रम राम लक्ष्मण का था। किन्तु फिर भी ये दोनों तपस्वी होकर वन में घूम रहे थे। इसीलिए आश्चर्य से हनुमान ने उन दोनों से पूछा की इस प्रकार कान्ति युक्त राज सिंहासन के योग्य, पराक्रमी आप दोनों राजसिंहासन को त्यागकर किस कारण से इस दुर्गम देश को आए हो। अर्थात् राज्य का भोग आपके लिए उचित है, वनवास अनुचित ऐसा हनुमान का आशय है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अवभासितः - अव+भास् धातु+क्त प्रत्यय प्रथम एकवचन
- राज्यार्हौ - राज्याय अर्हः राज्यार्हः। चतुर्थी तत्पुरुषसमास।

सन्धि युक्त शब्द

- पर्वतेन्द्रोऽसौ - पर्वतेन्द्रः + असौ। विसर्ग सन्धि।
- इहागतौ- इह + आगतौ। सवर्णदीर्घसन्धि।
- राज्यार्हावमरप्रख्यौ- राज्यार्हौ + अमरप्रख्यौ अच् सन्धि

प्रयोग परिवर्तन- युवयोः प्रभा अमुं पर्वतेन्द्रम् अवभासितवती, तादृशाभ्यां राज्यार्हाभ्याम् अमरप्रख्याभ्यां युवाभ्यां इह देशः कथम् आगतः।

पद्मपत्रेक्षणौ वीरौ जटामण्डलधारिणौ।
अन्योन्यसदृशौ वीरौ देवलोकादिहागतौ॥12॥

अन्वय- पद्मपत्रेक्षणौ जटामण्डलधारिणौ अन्योन्यसदृषौ वीरौ देवलोकात् इह देशं कथं आगतौ।

अन्वयार्थः- कमलपत्तों के सदृश नेत्रों वाले, जटाधारी, एक-दूसरे के समान महाबलशाली, स्वर्गलोक से इस देश को कैसे यहाँ आए।

सरलार्थः- भिक्षु वेशधारी हनुमान ने राम से पूछा की कमल पत्तों के जैसे नेत्रों वाले, जटाओं को धारण करने वाले, तपस्वी, एक समान महाबलशाली आप दोनों देवलोक से इस दुर्गम प्रदेश को किस कारण से आए।

तात्पर्यार्थः- जैसे कमल के पत्ते देखने में अत्यन्त रमणीय होते हैं, वैसे ही सुन्दर राम लक्ष्मण दोनों के नेत्र थे। एवं सौन्दर्यवान राम लक्ष्मण जटाधारी थे। और एक-दूसरे के समान थे। अर्थात् लक्ष्मण राम के समान वीर और सुन्दर था और राम लक्ष्मण के समान वीर और सुन्दर थे। उन दोनों को देखने से ज्ञात होता था कि वे दोनों देवलोक से ही यहाँ आए। इसीलिए वानरों में श्रेष्ठ हनुमान ने उन दोनों से पूछा की इस प्रकार से सौन्दर्य युक्त, जटाधारी, तपस्वी, आप दोनों देवलोक को त्यागकर किस कारण

ध्यान दें:

पाठ-13

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा

ध्यान दें:

से इस दुर्गम देश को आए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- पद्मपत्रेक्षणौ - पद्मस्य पत्रं पद्मपत्रम्, षष्ठी तत्पुरुष समास।
- जटामण्डलधारिणौ- जटाया: मण्डलं जटामण्डलम्, षष्ठी तत्पुरुष समास। धृधातो: - इन् प्रत्यय प्रथमा द्विवचन।
- अन्योन्यसदृशौ- अन्योन्येन सदृशो। तृतीया तत्पुरुष समास।

प्रयोग परिवर्तन- पद्मपत्रेक्षणाभ्यां जटामण्डलधारिभ्याम् अन्योन्यसदृशाभ्यां वीराभ्यां देवलोकात् इह देशं कथं आगत:।

अलंकार आलोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हो वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय ईक्षणे अर्थात् नेत्र है। उपमान पद्मपत्रे है। सादृश्यवाचक पद यहाँ नहीं है। सादृश्य धर्म सुन्दरत्वम् है। इस श्लोक में सादृश्यवाचक पद का और सादृश्यधर्म के नहीं होने से यहाँ लुप्तोपमा है।

यदृच्छयेव संप्राप्तौ चन्द्रसूर्यौ वसुंधराम्।
विशालवक्षसौ वीरौ मानुषौ देवरूपिणौ॥13॥

अन्वय- यदृच्छया वसुंधरां संप्राप्तौ चन्द्रसूर्यौ इव स्थितौ देवरूपिणौ विशालवक्षसौ वीरौ मानुषौ देवलोकात् इह देशं कथम् आगतौ।

अन्वयार्थ:- अपनी इच्छा से पृथ्वी को प्राप्त कर चन्द्रमा और सूर्य के समान स्थित है, देवताओं के समान रूप सम्पन्न विशाल नेत्रों वाले, महा पराक्रमी मनुष्य देवलोक से इस प्रदेश को कैसे आए।

सरलार्थ:- जैसे चन्द्रमा सूर्य अपनी इच्छा से राम लक्ष्मण के वेश में इस पृथ्वी पर आकर स्थित है। वैसे ही देवताओं के समान रूप सम्पन्न विशाल नेत्रों वाले, पराक्रमी आप दोनों राम लक्ष्मण से वानरों में श्रेष्ठ हनुमान ने पूछा की आप दोनों देवलोक को त्याग कर इस प्रदेश में किस कारण से आए हो।

तात्पर्यार्थ:- प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण को चन्द्रमा सूर्य के समान प्रदर्शित किया है। राम लक्ष्मण के दर्शन से ज्ञात होता था कि चन्द्रमा और सूर्य अपनी इच्छा से देवलोक को त्याग कर मनुष्य रूप में इस पृथ्वी पर आकर स्थित है। जैसे वीरों का वक्ष स्थल बड़ा होता है, वैसे ही उन दोनों का वक्षप्रदेश था। जैसे देवताओं का रूप रमणीय होता है, जिसके दर्शन से सभी को आनन्द होता है, वैसा ही रमणीय रूप उन दोनों का था। इसीलिए ये दोनों साधारण व्यक्ति नहीं हैं ऐसा हनुमान को ज्ञात हुआ। उनसे पूछा कि चन्द्रसूर्य के समान विशाल नेत्रों वाले सुन्दर आप दोनों स्वर्गलोक को त्यागकर इस दुर्गम देश में किस कारण से आए हो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- चन्द्रसूर्यौ - चन्द्रश्च सूर्यश्च चन्द्रसूर्यौ । इतरेतर द्वन्द्वसमास।

ध्यान दें:

- विशालवक्षसौ - विशालं वक्षः ययोस्तौ - बहुव्रीहि समास।
- देवरूपिणौ - देवस्य रूपं देवरूपम् षष्ठी तत्पुरुष समास। देव + इन् प्रथमा द्विवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- यदृच्छयेव- यदृच्छया + इव गुण सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- यदृच्छया वसुंधरां संप्राप्ताभ्यां चन्द्रसूर्याभ्याम् इव स्थिताभ्यां देवरूपिभ्यां विशालवक्षोभ्यां वीराभ्यां मानुषाभ्यां देवलोकात् इह देशः कथम् आगतः।

सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ इव गोवृषौ।
आयताश्च सुवृत्ताश्च बाहवः परिघोपमाः॥14॥
सर्वभूषणभूषार्हाः किमर्थम् न विभूषिताः।
उभौ योग्यावहं मन्ये रक्षितुम् पृथिवीम् इमाम्॥15॥
ससागरवनां कृत्स्नां विन्ध्यमेरुविभूषिताम्।

अन्वय- अहं हनुमान् सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ गोवृषौ इव युवाम् उभौ इमां ससागरवनां विन्ध्यमेरुविभूषितां कृत्स्नां पृथिवीम् रक्षितुं योग्यौ मन्ये, अतः युवयोः आयताः सुवृत्ताः परिघोपमाः सर्वभूषणभूषार्हाः बाहवः किमर्थं न विभूषिताः।

अन्वयार्थः - मैं हनुमान सिंह के समान कन्धे वाले, महा उत्साही, नवीन वृषभ के समान मद से युक्त, पराक्रमी आप दोनों इस सागर सहित, वनों की, विन्ध्य मेरु से सुशोभित इस सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने के लिए योग्य हो ऐसा मेरा विचार है, इसीलिए आप दोनों विस्तृत गदा के समान सभी आभूषण के योग्य भुजाओं को किसलिए अलंकृत नहीं करते हो।

सरलार्थः- हनुमान राम लक्ष्मण की प्रशंसा करते हुए पूछते हैं की सिंह के समान कन्धों वाले, नए वृषभ के समान मद से युक्त आप दोनों इस सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने योग्य हो, किन्तु आप दोनों ऐसी विस्तृत हस्ट पुष्ट गदा के जैसी भुजाओं को किसलिए अलंकारों से अलंकृत नहीं करते हो।

तात्पर्यार्थः- प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण की देश रक्षण सामर्थ्य को वर्णित किया है। जैसे सिंह के स्कन्ध स्थिर और भयंकर होते हैं, वैसे ही कन्धे उन दोनों के भी थे। उन दोनों का उत्साह भी महान था। जैसे मद से युक्त नवीन वृषभ बहुत पराक्रमी होता है और जो कुछ भी कर सकता है, उसी प्रकार की सामर्थ्य उन दोनों में थी। इसलिए हनुमान ने उन दोनों से कहा कि इस प्रकार सामर्थ्यवान तुम दोनों सागरों और जंगल सहित विन्ध्य पर्वत से सुशोभित सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने में समर्थ हो। राम लक्ष्मण की भुजाएँ लम्बी गदा के समान थी। और जैसे सर्प का शरीर विस्तृत होता है वैसे उन दोनों की भुजा विस्तृत थी। अगर उनकी भुजाओं में कोई भी अलंकार होता तो वह अलंकार वहाँ शोभा देता। किन्तु हनुमान को आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार की सुन्दर भुजाओं में कैसे इन दोनों ने आभूषण को धारण नहीं किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सिंहस्कन्धौ - सिंहस्य स्कन्धः सिंहस्कन्ध, षष्ठी तत्पुरुष समास।
- महोत्साहौ - महान् उत्साहः ययोः तौ - बहुव्रीहि समास।

पाठ-13

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा

ध्यान दें:

- परिघोपमाः - परिघः उपमा येषां ते - बहुव्रीहि समास।
- सर्वभूषणभूषार्हाः - सर्वाणि भूषणानि सर्वभूषणानि- इतरेतरद्वन्द्व समास। सर्वभूषणानां भूषा सर्वभूषणभूषा। षष्ठी तत्पुरुष समास।
- रक्षितुम् - रक्ष् धातु + तुमुन् प्रत्यय।
- ससागरवनाम्- सागराश्च वनानि च सागरवनानि- इतरेतरद्वन्द्व समास।
- विन्ध्यमेरुविभूषिताम्- विन्ध्यः एव मेरुः विन्ध्यमेरुः - कर्मधारय समास।

सन्धि युक्त शब्द

- समदाविव - समदौ + इव अच्सन्धि।
- आयताश्च - आयताः + च। विसर्ग सन्धि।
- सुवृत्ताश्च - सुवृत्ताः + च। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- मया हनुमता सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ गोवृषौ इव युवाम् उभौ इयं ससागरवना विन्ध्यमेरुविभूषिता कृत्स्ना पृथिवी रक्षितुं योग्यावहः मन्येते, अतः युवयोः आयतान् सुवृत्तान् परिघोपमान् सर्वभूषणभूषार्हान् बाहून् किमर्थं न विभूषितवन्तौ।

अलंकार आलोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय रामलक्ष्मणौ है। उपमान समदो गोवृषौ है। सादृश्यवाचक पद इव है। सादृश्यधर्म महोत्सवम् है। इस श्लोक में लुप्तोपमा है।

इमे च धनुषी चित्रे श्लक्ष्णे चित्रानुलेपने॥16॥
प्रकाशेते यथेन्द्रस्य वज्रे हेमविभूषिते।

अन्वय- इमे चित्रे श्लक्ष्णे चित्रानुलेपने हेमविभूषिते धनुषी इन्द्रस्य वज्रे यथा तथा प्रकाशेते।

अन्वयार्थः- इस में बहुत से चित्र, चिकने, स्वर्णादि से बने हुए चित्र रूप विशिष्ट अनुलेपन से स्वर्ण से अलंकृत धनुष इन्द्र के वज्र के समान प्रकाशित होते हैं।

सरलार्थः- हनुमान ने राम लक्ष्मण के धनुष की प्रशंसा करते हुए उन दोनों से कहा कि जैसे इन्द्र का वज्र है वैसे ही आप दोनों के ये धनुष बहुत वर्णों वाले चिकने और स्वर्ण से अलंकृत है।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में हनुमान ने राम लक्ष्मण के धनुष की प्रशंसा की। उन दोनों के धनुष में अनेक वर्ण अर्थात् रंग थे। स्वर्ण से निर्मित जो चित्र रूप है, धनुष के मध्य में चित्र रूप से अनुलेपन किया था। और स्वर्ण से सजे हुए वे धनुष चिकने थे। अर्थात् वे धनुष के दर्शन से भी रमणीय थे। जैसे इन्द्र के वज्र को किसी के द्वारा भी नहीं देखा गया, इसीलिए वह अद्भुत है। उसी प्रकार इस लोक में इस प्रकार के धनुष सामान्यतः नहीं देखे जाते, इसीलिए ये धनुष भी अद्भुत थे।

ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- चित्रानुलेपने - चित्रेण अनुलेपने चित्रानुलेपने - तृतीय तत्पुरुष समास।
- हेमविभूषिते - हेम्ना विभूषिते हेमविभूषिते - तृतीय तत्पुरुष समास।

सन्धि युक्त शब्द

- यथेन्द्रस्य - यथा + इन्द्रस्य, गुण सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- आभ्यां चित्राभ्यां श्लक्ष्णाभ्यां चित्रानुलेपनाभ्यां धनुर्भ्याम् इन्द्रस्य वज्राभ्यां यथा तथा प्रकाश्यते।

अलंकार आलोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय धनुषी है। उपमान वज्रे है। सादृश्यवाचक पद यथा है। सादृश्यधर्म शत्रुनाशकत्वम् है। इस श्लोक में लुप्तोपमा है।

संपूर्णाश्च शितैर्बाणैस्तूणाश्च शुभदर्शनाः॥17॥
जीवितान्तकरैर्घोरैर्ज्वलद्भिरिव पन्नगैः।

अन्वय- शितैः जीवितान्तकरैः पन्नगैः इव घोरैः ज्वलद्भिः बाणैः तूणाः संपूर्णाः अत एव शुभदर्शनाः सन्ति।

अन्वयार्थः- तीक्ष्ण, शत्रु के जीवन का विध्वंसक, सर्प के समान भयंकर, ज्वाला के समान प्रकाशमान, बाणों से पूर्ण तूणीर बहुत ही सुन्दर देखने योग्य है।

सरलार्थः- हनुमान ने राम लक्ष्मण के बाणों और तूणीरों की प्रशंसा करते हुए उन दोनों से कहा कि आप दोनों के बाण बहुत तीक्ष्ण, सर्प के समान शत्रुनाशक और भयंकर, उन जैसे बाणों से आप दोनों का तूणीर भरा है। इसीलिए वे तूणीर भी देखने योग्य है।

तात्पर्यार्थः- प्रस्तुत इस श्लोक में हनुमान राम लक्ष्मण के बाणों को देखकर आश्चर्य चकित हुआ। इसीलिए उनके बाणों की प्रशंसा की, वे बाण बहुत तीक्ष्ण है, अर्थात् यदि किसी के भी ऊपर प्रयोग करे तो उसका मरना निश्चित होता है। शत्रु अगर सर्प को छूता है तो पल भर में ही वह सर्प अपने विष से उस शत्रु का विनाश कर देता है। उसी प्रकार उन दोनों के बाण भी पल भर में ही शत्रुविनाशक थे। और उनके बाण भयंकर भी थे जिनके दर्शन मात्र से ही शत्रु के मन में भय उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार के प्रकाशमान बाणों से उन दोनों का तूणीर भरा हुआ था। इसीलिए वैसे असाधारण बाणों से अलंकृत सुशोभित उन दोनों के तूणीर भी सुन्दर दिखाई देते थे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- संपूर्णाः - सम् + पूर्धातु + क्त प्रत्यय प्रथमा बहुवचन।
- शुभदर्शनाः - शुभं दर्शनं येषां ते शुभदर्शनाः - बहुव्रीहि समास।
- जीवितान्तकरैः - अन्तं कुर्वन्ति इति अन्तकराः। षष्ठी तत्पुरुष समास।

ध्यान दें:

- ज्वलद्भिः - ज्वल् धातु + शतृ प्रत्यय तृतीय बहुवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- संपूर्णाश्च - संपूर्णाः + च। विसर्ग सन्धि।
- शितैर्बाणैः - शितैः + बाणैः। विसर्ग सन्धि
- तूणाश्च - तूणाः + च। विसर्ग सन्धि
- जीवितान्तकरैर्घोरैः - जीवितान्तकरैः + घोरैः। विसर्ग सन्धि
- घोरैर्ज्वलद्भिः - घोरैः + ज्वलद्भिः। विसर्ग सन्धि
- ज्वलद्भिरिव - ज्वलद्भिः + इव। विसर्ग सन्धि

प्रयोग परिवर्तन- शितैः जीवितान्तकरैः पन्नगैः इव घोरैः ज्वलद्भिः बाणैः तूणैः संपूर्णैः अत एव शुभदर्शनैः भूयन्ते।

अलंकार आलोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय तावत् बाणाः है। उपमान पन्नगाः है। सादृश्यवाचक पद इव है। सादृश्य धर्म जीवितान्तकरत्वम् अर्थात् शत्रुजीवननाशकत्वम् है। इस श्लोक में चारों अंश है इसीलिए पूर्णोपमा है।

महाप्रमाणौ विपुलौ तप्तहाटकभूषणौ॥18॥
खड्गावेतौ विराजेते निर्मुक्तभुजगाविव।

अन्वय- महाप्रमाणौ विपुलौ तप्तहाटकभूषणौ एतौ खड्गौ निर्मुक्तभुजगौ इव विराजेते।

अन्वयार्थः- अति विस्तृत एवं तपे हुए स्वर्ण से अंकित ये दोनों खड्ग केंचुली त्यागे हुए सर्प के समान शोभित हो रही है।

सरलार्थः- हनुमान राम लक्ष्मण के खड्ग की प्रशंसा करते हुए उन दोनों से कहते हैं की आप दोनों की तलवार बहुत विस्तृत हैं एवं वह पक्के स्वर्ण से अंकित थी। और केंचुली छोड़े हुए सर्प के समान वे दोनों खड्ग थी।

तात्पर्यार्थः- प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के मुख से राम लक्ष्मण की खड्ग का वर्णन किया है। उन दोनों की तलवार विस्तृत थी। और वे दोनों पुष्ट थे। जो उनके शत्रुओं का विनाश कर सकते थे। वहाँ पक्के स्वर्ण से तलवार के बीच में अंकित था। इसीलिए उन दोनों के खड्ग के दर्शन भी अत्यन्त रमणीय थे। जब सर्प केंचुली को त्यागता है फिर वह सर्प पूर्व से भी अधिक चिकना होता है। उसी प्रकार उन दोनों की तलवारें चिकनी थी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- महाप्रमाणौ- महत् प्रमाणं ययोः तौ महाप्रमाणौ। बहुव्रीहि समास।

ध्यान दें:

- तप्तहाटकभूषणौ - तप्तं च तत् हाटकं तप्तहाटकम् - कर्मधारय समास।
- निर्मुक्तभुजगौ - निर्मुक्तो च तौ भुजगौ निर्मुक्तभुजगौ- कर्मधारय समास।

सन्धि युक्त शब्द

- खड्गावेतौ - खड्गौ + एतौ। अच् सन्धि।
- निर्मुक्तभुजगाविव - निर्मुक्तभुजगौ + इव।

प्रयोग परिवर्तन- महाप्रमाणाभ्यां विपुलाभ्यां तप्तहाटकभूषणाभ्याम् एताभ्यां खड्गाभ्यां निर्मुक्तभुजगाभ्याम् इव विराज्यते।

अलंकार आलोचना- इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय खड्गौ है। उपमान निर्मुक्तभुजगौ है। सादृश्यवाचक पद इव है। सादृश्यधर्म चिक्कणत्वं है। इस श्लोक में लुप्तोपमा है।

एवं मां परिभाषन्तं कस्माद् वै नाभिभाषतः॥19॥

अन्वय- एवं परिभाषन्तं मां कस्मात् वै युवां न अभिभाषतः।

अन्वयार्थः- अनेक प्रकार से कहते हुए मुझ हनुमान से किस कारण से आप दोनों ने कुछ नहीं कहा।

सरलार्थः- इस प्रकार राम लक्ष्मण की प्रशंसा के बाद हनुमान ने कुछ आश्चर्यचकित होकर उन दोनों से पूछा कि मैनें इतनी देर तक बहुत कुछ कहा, किन्तु आप दोनों ने कैसे मेरे लिए कुछ भी नहीं कहा।

तात्पर्यार्थः- हनुमान ने इतनी देर तक राम लक्ष्मण के वीरता की, सौन्दर्य की, उन दोनों की भुजाओं की, धनुष की, बाण और खड्ग की बहुत प्रशंसा की, किन्तु वे दोनों राम लक्ष्मण यह सब सुनकर भी मौन ही रहे कुछ भी नहीं कहा। इसीलिए हनुमान ने कुछ चकित होकर उन दोनों से कहा- की मैंने इतनी देर तक बहुत कुछ कहा, किन्तु आप दोनों ने मुझसे कुछ भी नहीं कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परिभाषन्तम् - परि + भाष् धातु + शतृ प्रत्यय, द्वितीय एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- कस्माद्वै - कस्मात् + वै, जश्त्व सन्धि
- नाभिभाषतः - न + अभिभाषतः। सवर्ण दीर्घ सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- एवं परिभाषन् अहं कस्मात् वै युवाभ्यां न अभिभाष्ये।

सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद् वानरपुंगव।

ध्यान दें:

वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद् भ्रमति दु:खित:॥20॥

अन्वय- सुग्रीव: नाम कश्चित् वानरपुंगव: वीर: धर्मात्मा भ्रात्रा विनिकृत: दु:खित: जगत् भ्रमति।

अन्वयार्थ:- सुग्रीव नाम वाला कोई वानरों में श्रेष्ठ शूरवीर, धार्मिक अपने भाई से अलग होकर दु:खी होता हुआ जगत का भ्रमण करता है।

सरलार्थ:- हनुमान ने सुग्रीव के विषय में राम लक्ष्मण से कहा की सुग्रीव धर्म का पालन करने वाले वानरों में उत्तम है, वह महान वीर अपने भाई से अलग होकर दु:खी होता हुआ विश्व का भ्रमण करता है।

तात्पर्यार्थ- सुग्रीव के द्वारा भेजा गया हनुमान राम लक्ष्मण के पास गया, और वहाँ उन दोनों के वीरत्व, सौन्दर्य आदि को देखकर जाना की ये साधारण व्यक्ति नहीं हैं। इसीलिए उन दोनों को बाली ने नहीं भेजा उसका निश्चय हुआ। इसीलिए अपने राजा सुग्रीव की स्तुति करके उसके विषय में कहा की सुग्रीव ही वानरों में उत्तम और महाबलशाली वानर है। वह एक महान धार्मिक है। किन्तु उसके भाई बाली ने किसी कारण से उसे छोड़ दिया। वह बाली आज भी उसे मारने के लिए प्रयत्न करता है। इसीलिए सुग्रीव अब दु:खी होकर भाई के भय से सारे विश्व का भ्रमण करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वानरपुंगव: - वानरेषु पुंगव वानरपुंगव: - सप्तमी तत्पुरुष समास।
- विनिकृत: - वि + नि + कृ धातु + क्त प्रत्यय, प्रथमा एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- सुग्रीवो नाम - सुग्रीव: + नाम, विसर्ग सन्धि।
- कश्चिद्वानरपुंगव - कश्चित् + वानरपुंगव। जश्त्वसन्धि
- जगद्भ्रमति - जगत् + भ्रमति। जशत्व सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- सुग्रीवेण नाम्ना केनचित् वानरपुंगवेन वीरेण धर्मात्मना भ्रात्रा विनिकृतेन दु:खितेन जगत् भ्रम्यते।

प्राप्तोऽहं प्रेषितस्तेन सुग्रीवेण महात्मना।
राज्ञा वानरमुख्यानां हनुमान् नाम वानर:॥21॥

अन्वय- तेन वानरमुख्यानां राज्ञा महात्मना सुग्रीवेण प्रेषित: अहं हनुमान् नाम वानर: त्वां प्राप्त: अस्मि।

अन्वयार्थ:- मैं वानरों के मुख्य राजा महाबुद्धिमानी सुग्रीव के द्वारा भेजा हनुमान नाम का वानर तुम दोनों को प्राप्त हूँ।

सरलार्थ:- राम लक्ष्मण के स्वरूप को जानकर हनुमान ने अपने विषय में उन दोनों से कहा की मेरा नाम हनुमान है, वानरों के राजा महात्मा सुग्रीव ने मुझे यहाँ भेजा। इसीलिए मैं आप दोनों के पास आया।

तात्पर्यार्थ:- पूर्व श्लोक में हनुमान ने अपने राजा सुग्रीव के विषय में कहा। इसीलिए प्रस्तुत इस

ध्यान दें:

श्लोक में हनुमान ने राम लक्ष्मण से अपने परिचय को कहना आरम्भ किया। हनुमान ने विनम्र होकर उन दोनों से कहा कि मेरा नाम हनुमान है। मैं एक वानर हूँ। वानर राज महात्मा सुग्रीव के आदेशानुसार मैं आप दोनों के समीप आया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- महात्मना - महान् आत्मा यस्य स - बहुव्रीहि समास
- वानरमुख्यानाम् - वानरेषु मुख्याः वानरमुख्याः - षष्ठी तत्पुरुष समास

सन्धि युक्त शब्द

- प्राप्तोऽहम् - प्राप्तः + अहम्, विसर्ग सन्धि
- प्रेषितस्तेन - प्रेषितः + तेन, विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन - मया तेन वानरमुख्यानां राज्ञा महात्मना सुग्रीवेण प्रेषितेन हनुमता नाम वानरेण त्वां प्राप्तेन भूयते।

युवाभ्याम् स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति।

अन्वय- स हि धर्मात्मा सुग्रीवः युवाभ्यां सह सख्यम् इच्छति।

अन्वयार्थः- वह धर्मपरायण सुग्रीव नामक राजा आप दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करता है।

सरलार्थः- वानर राज सुग्रीव ने हनुमान को कैसे राम लक्ष्मण के समीप भेजा इस प्रश्न पर हनुमान ने कहा कि- सुग्रीव आप दोनों का मित्र होने की इच्छा करता है।

तात्पर्यार्थः- हनुमान का परिचय जानने के बाद, सुग्रीव ने हनुमान को यहाँ भेजा, ऐसा श्री राम ने जाना। इसीलिए उन्होनें सुग्रीव के द्वारा हनुमान को यहाँ भेजने के कारण को जानने की इच्छा की। इसीलिए हनुमान ने उनसे कहना आरम्भ किया था। हनुमान ने कहा कि वानर राज सुग्रीव राम लक्ष्मण के साथ मित्रता करने की इच्छा करता है। इसीलिए उसने आप दोनों के परिचय को जानने के लिए मुझे यहाँ भेजा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सख्यम् - सखि + ष्यञ प्रत्यय द्वितीय एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- स हि - सः + हि। विसर्ग सन्धि

प्रयोग परिवर्तन- तेन हि धर्मात्मना सुग्रीवेण युवाभ्यां सह सख्यम् इष्यते।

तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम्॥22॥
भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नंसुग्रीवप्रियकारणात्।
ऋष्यमूकादिह प्राप्तं कामगं कामचारिणम्॥23॥

अन्वय- भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नं सुग्रीवप्रियकारणात् ऋष्यमूकात् इह प्राप्तं कामगं कामचारिणं तस्य

पाठ-13

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा

ध्यान दें:

सचिवं पवनात्मजं वानरं मां वित्तम्।

अन्वयार्थः- भिक्षु के वेश में सुग्रीव के प्रिय के लिए ऋष्यमूक नामक पर्वत से यहाँ आया अपनी इच्छा से कहीं जाने योग्य कोई रूप धारण करने योग्य उस सुग्रीव का सचिव पवन पुत्र वानर मुझे हनुमान जानों।

सरलार्थः- हनुमान ने राम लक्ष्मण से अपने विषय में कहा कि मैं वायु पुत्र हनुमान वानर राज सुग्रीव का सचिव हूँ। आप दोनों का परिचय जानना ही उसका इच्छित कार्य है। इसीलिए उसे करने के लिए भिक्षु के वेश में ऋष्यमूक पर्वत से यहाँ आया। मैं अपनी इच्छा से सब जगह जा सकता हूँ। और कोई भी रूप धारण कर सकता हूँ।

तात्पर्यार्थः- वानर राज सुग्रीव राम लक्ष्मण के साथ मित्रता को स्थापित करना चाहता है। इसीलिए उसने हनुमान को यहाँ भेजा ऐसा हनुमान के मुख से श्री राम ने जाना। किन्तु सुग्रीव के साथ हनुमान का क्या सम्बन्ध है, इस प्रश्न पर हनुमान ने उन दोनों से कहा कि मैं वायु पुत्र हनुमान वानर राज सुग्रीव का सचिव हूँ। आप दोनों का परिचय जानना वानरराज सुग्रीव का इष्ट कार्य है। इसीलिए मैं आप दोनों के परिचय को जानने के लिए भिक्षु के रूप को धारण करके ऋष्यमूक पर्वत से आप दोनों के समीप आया। मैं इच्छानुसार जहाँ कहीं भी जा सकता हूँ। और इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकता हूँ। वस्तुतः प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान की साधारण से अधिक योग्यता को वर्णित किया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वित्तम् - विद् धातु, लोट् लकार, मध्यम पुरुष द्विवचन।
- पवनात्मजम् - पवनस्य आत्मजः पवनात्मजः - षष्ठी तत्पुरुष समास
- भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नम् - भिक्षुरूपेण प्रतिच्छन्नः भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नः - तृतीय तत्पुरुष समास।
- सुग्रीवप्रियकारणात् - सुग्रीवस्य प्रियं सुग्रीवप्रियम् - षष्ठी तत्पुरुष समास।

  सुग्रीवप्रियमेव कारणम् सुग्रीवप्रियकारणम् - कर्मधारय समास।
- कामचारिणम् - कामं चरति इति कामचारी।

सन्धि युक्त शब्द

- ऋष्यमूकादिह - ऋष्यमूकात् + इह। जश्त्व सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नः सुग्रीवप्रियकारणात् ऋष्यमूकात् इह प्राप्तः कामगः कामचारी तस्य सचिवः पवनात्मजः वानरः अहं विद्यै।

पाठगत प्रश्न

1. किससे पर्वत प्रकाशित हुआ?
2. राम लक्ष्मण के नेत्र कैसे थे?

3. राम लक्ष्मण किस लोक से यहाँ आए?

4. चन्द्रमा सूर्य कहाँ प्राप्त हुए?

5. राम लक्ष्मण किसके समान महा उत्साही थे?

6. राम लक्ष्मण की भुजाएँ किसके जैसी थी?

7. राम लक्ष्मण किसकी रक्षा करने के लिए योग्य थे?

8. उन दोनों के धनुष कैसे थे?

9. उन दोनों के धनुष किसके समान प्रकाशित होते हैं?

10. उन दोनों के तूणीर किससे पूर्ण थे?

11. उन दोनों की खड्ग किसके समान थी?

12. सुग्रीव किससे अलग हुआ?

13. सुग्रीव क्या इच्छा करता है?

14. हनुमान किसके जैसा था?

15. पद्मपत्रेक्षणौ..... यहाँ कौन सा अलंकार है?

    क. दृष्टान्त अलंकार

    ख. उपमा अलंकार

    ग. रूपक अलंकार

    घ. उत्प्रेक्षा अलंकार

16. राज्यार्हावमरप्रख्यौ कथं देशमिहागतौ - किसकी उक्ति है?

    क. सुग्रीव की

    ख. हनुमान की

    ग. राम की

    घ. लक्ष्मण की

17. विन्धयमेरुविभूषिता किसका विशेषण है

    क. पम्पा नदी का

    ख. सीता का

    ग. पृथ्वी का

    घ. लंका का

पाठ-13

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा

ध्यान दें:

ध्यान दें:

18. बाणों को किसके द्वारा उपमित किया गया है।

क. सर्प के

ख. वज्र के

ग. केचुली त्यागे सर्प के

घ. हाथी की सूंड के

19. हनुमान किसका सचिव है।

क. राम का

ख. वायु का

ग. बाली का

घ. सुग्रीव का

20. क. स्तम्भ से ख. स्तम्भ मिलाओ।

क. स्तम्भ	**ख. स्तम्भ**
1. मन्ये	क. संचरति
2. पद्मपत्रे	ख. बाहव:
3. चन्द्रसूर्यौ	ग. गोवृषौ
4. प्रकाशेते	घ. ईक्षणे
5. समदौ	ङ सुग्रीव:
6. विराजेते	च. राजेते
7. सर्वभूषणभूषार्हा:	छ. जानीतम्
8. भ्रमति	ज. चिन्तयामि
9. दु:खित:	झ. शोभेते
10. वित्तम्	ञ. रामलक्ष्मणौ

पाठ सार

सुग्रीव के आदेशानुसार हनुमान अपने वानर रूप को छिपाकर भिक्षु के वेश से पम्पा सरोवर के तट पर स्थित राम लक्ष्मण के पास गए। वहाँ जाकर उसने अपनी मनोहर वाणी से उन दोनों की प्रशंसा करना आरम्भ किया। उन दोनों की कान्ति से ऋष्यमूक पर्वत प्रकाशित हो गया। राज सिंहासन के योग्य वे कैसे तपस्वी के वेश में इस दुर्गम प्रदेश को आए ऐसा हनुमान को पूछना था। दोनों जटाधारियों के नेत्र कमल के पत्ते के समान थे। उन दोनों के दर्शन से ज्ञात होता है कि जैसे चन्द्रमा और सूर्य अपनी

ध्यान दें:

इच्छा से मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर आ गए। पशुओं के राजा सिंह से भी अधिक बलवान, नवीन वृषभ के समान महा उत्साही वे दोनों सागर वन सहित विन्धय पर्वत से सुशोभित इस सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने योग्य है, ऐसा हनुमान का विश्वास था। किन्तु उसे आश्चर्य हुआ की राम लक्ष्मण की भुजाएँ गदा के समान सुदृढ़ थीं। जिन्हें किसी भी अलंकार से अलंकृत किया जाए तो वे भुजाएँ शोभित होती थी। परन्तु फिर भी इस प्रकार की सुन्दर भुजाओं में उन्होंने कोई भी अलंकार धारण नहीं किया।

इन्द्र के वज्र के समान उन दोनों के धनुष पक्के स्वर्ण से अंकित थे। सर्प के समान शत्रु प्राण के विनाशक, भंयकर प्रकाशमान बाणों से उन दोनों के तूणीर भरे हुए थे। इसीलिए हनुमान ने उस कारण को पूछकर राजा सुग्रीव के विषय में कहना आरम्भ किया। फिर उस सुग्रीव के सचिव ने अपने परिचय को देकर सुग्रीव ने ही तुम दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करते हुए उसे यहाँ भेजा ऐसा कहा। यह सब कहकर उसने पुनः उन दोनों को कुछ नहीं कहा।

आपने क्या सीखा

- प्रकाशमान प्रकाश से उसके सम्पर्क में आयी वस्तु भी प्रकाश को प्राप्त करती है।
- प्रशंसा योग्य व्यक्ति की उचित रूप से प्रशंसा करनी चाहिए।
- राज्य सिंहासन योग्य व्यक्ति को राज्य का भार अवश्य ढोना चाहिए।
- अपने परिचय से पूर्व प्रारम्भ में अपने राजा का परिचय देना चाहिए।
- अपने राजा की प्रशंसा सब जगह करनी चाहिए।

पाठान्त प्रश्न

1. राम लक्ष्मण की भुजाओं के विषय में हनुमान की उक्ति की सप्रसंग आलोचना करें।
2. राम लक्ष्मण के शस्त्रों का यथा ग्रन्थानुसार वर्णन कीजिए।
3. राम लक्ष्मण के बाण कैसे थे यथा ग्रन्थानुसार आलोचना कीजिए।
4. संपूर्णाश्च शितैर्बाणै:.....यहाँ जो अलंकार है उसके विषय में संक्षेप में लिखिए।
5. हनुमान ने सुग्रीव के विषय में ओर अपने विषय में उन दोनों के पास में क्या कहा, सप्रसंग लिखें।
6. हनुमान में क्या क्या सामर्थ्य था?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर तालिका

1. राम लक्ष्मण की प्रभा से
2. कमल के पत्ते के समान
3. देवलोक से

ध्यान दें:

4. पृथ्वी को
5. मदयुक्त वृषभ के समान
6. विस्तृत और सभी आभूषण से भूषित योग्य
7. समुद्र वनो विन्ध्य मेरु से सुशोभित पृथ्वी की
8. विचित्र चिकने और चित्र अनुलेपन युक्त
9. इन्द्र के वज्र के समान
10. सर्प के समान जीवन विनाशक भयंकर तीक्ष्ण बाण
11. केंचुली त्यागे सर्प के समान
12. भाई से
13. राम लक्ष्मण के साथ मित्रता
14. कहीं भी जाने योग्य और कोई भी रूप धारण करने में सक्षम
15. (ख)
16. (ख)
17. (ग)
18. (क)
19. (घ)
20. 1. (ज)
    2. (घ)
    3. (ञ)
    4. (च)
    5. (ग)
    6. (झ)
    7. (ख)
    8. (क)
    9. (ङ)
    10. (छ)